पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

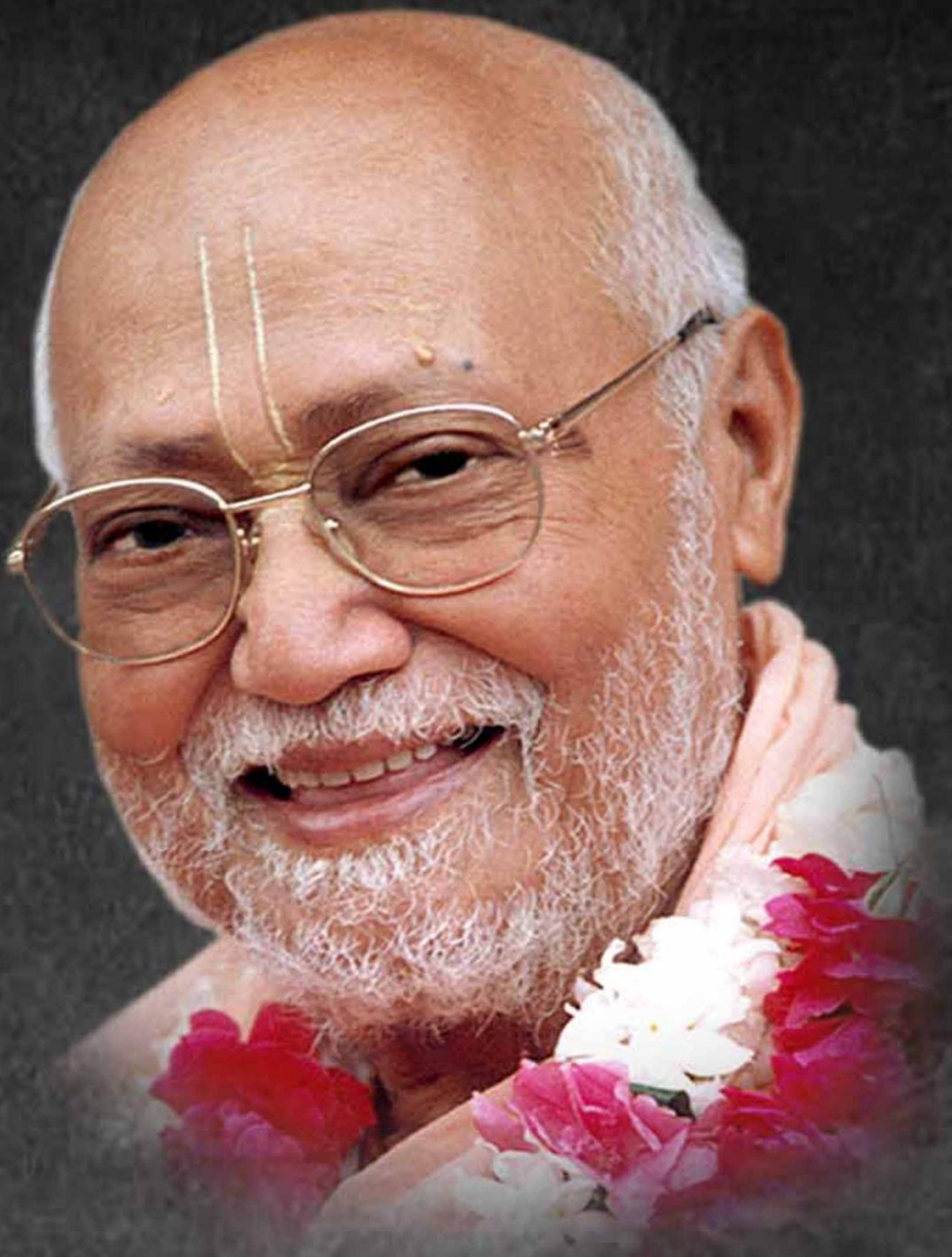

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

तृतीय खण्ड

भाग – 21

श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ, वृन्दावन
(उत्तर प्रदेश)

श्रीलगुरुदेव

श्रील गुरुदेव जी श्रीवृन्दावनधाम में मठ की स्थापना से पहले जब अपने गुरुभाईयों और त्यागी शिष्यों के साथ वृन्दावन में जाते थे, तब कालियदह में परम पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति सर्वस्व गिरि महाराज जी के संस्थापित श्रीविनोदवाणी गौड़ीय मठ में जाकर रहते थे। उस समय कालियदह के आसपास बहुत कम लोग रहा करते थे। अधिकतर व्यक्ति खुले मैदान में शौचादि जाते थे। सन् 1956 में

श्रील गुरुदेव जी ने वृन्दावन के श्रीरंग जी मन्दिर के पास ही सर्वेश्वर हवेली में दो मन्जिला मकान किराये पर लिया और वहाँ श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ की एक शाखा संस्थापित की। उस समय उस मठ के मठ-रक्षक का दायित्व श्रीगुरुदेव जी के दीक्षित शिष्य, श्रीमथुरानाथ दास को दिया गया।

श्रील गुरुदेव जी की अध्यक्षता में सन् 1959 ई. में 84 कोस श्रीब्रजमण्डल परिक्रमा और नियमसेवा अथवा श्रीदामोदर-व्रत, ब्रज के विभिन्न स्थानों पर तम्बुओं

के शिविर में बिताते हुए अनुष्ठित हुआ था। भारत के विभिन्न स्थानों से बहुत से भक्तों ने इस भक्ति के अनुष्ठान में योगदान दिया था। परिक्रमा, मथुरा से आरम्भ होकर वृन्दावन में आकर समाप्त हुई। उस बार कोलकाता के रहने वाले श्री सुधीर चन्द्र राय ने भी ब्रजमण्डल-परिक्रमा की थी। जब श्रील गुरुदेव जी ने वृन्दावन में अपनी ज़मीन पर मठ संस्थापन की इच्छा प्रकाशित की तो श्री सुधीर बाबू उसकी सेवा करने के लिये उत्सुक हो उठे। उनके रुपयों से वृन्दावन के राधानिवास में मिर्ज़ापुर धर्मशाला

के सामने वाली ज़मीन ली गयी। जमीन लेने के बाद पहले ज़मीन के चारों ओर मिट्टी की दीवार तथा एक कच्चा कमरा बना जिसमें एक सेवक रहता था। वृन्दावन में खाली ज़मीन पर जबरदस्ती दखल होने की आशंका रहने के कारण पहरेदार की ज़रूरत होने पर स्थानीय परिचित एक साहसी व्यक्ति निशि को भी रखा हुआ था। धीरे-धीरे वहाँ पर श्रील गुरुदेव जी के रहने का कमरा और सेवकों के कमरे भी बन गये। उस समय श्रील गुरुदेव जी ने अमृतसर में जाकर पुराने शहर की नमक मण्डी स्थित बाबा श्री

पुरुषोत्तम दास जी के मन्दिर में एक महीना रहकर प्रचार किया था। वहाँ के प्रसिद्ध व्यक्ति- अमृतसर ट्रान्सपोर्ट कम्पनी के मालिक - लाला श्री साईं दास जी (बिजली पहलवान) श्रील गुरुदेव जी के दर्शन करने के लिये नमक मण्डी के मन्दिर में आये । उस समय पूरे पंजाब में बिजली पहलवान का नाम एक महान दाता के रूप में प्रसिद्ध था । वे श्रील गुरुदेव जी को कुछ कम्बल और रुपया देने आये थे । श्रील गुरुदेव जी ने जब उनको वृन्दावन में मन्दिर बनाने के लिये कहा तो उन्होंने साथसाथ ही

स्वीकार कर लिया। कोलकाता निवासी श्रील गुरुदेव जी के चरणाश्रित शिष्य, इन्जीनियर, श्रीगोपाल चन्द्र दे ने नौ-शिखरों वाले श्रीमन्दिर का नक्शा तैयार किया। उसी नक्शे के अनुसार नौ-चूड़े वाला श्रीमन्दिर प्रकाशित हुआ । ये मन्दिर 30 नवम्बर बुधवार को श्रील गुरुदेव जी के सेवानियामकत्व में प्रतिष्ठित हुआ । इस शुभानुष्ठान में, मन्दिर - दाता लाला साईं दास जी के पुत्र श्री कृष्ण मोहन भी उपस्थित थे। प्रातः वृन्दावन में सर्वेश्वर हवेली में पहले से संस्थापित श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ से

श्री श्री गुरु-गौरांग- राधागोविन्द जी के प्राचीन विग्रहों ने संकीर्त्तन - शोभायात्रा के साथ राधा निवास स्थित नये मठ के नये श्रीमन्दिर में शुभयात्रा की।

महाभिषेक, यज्ञ और श्रीनाम संकीर्त्तन के विराट समारोह के साथ श्रीगौरांग और श्रीराधा गोविन्द के नये विशाल विग्रह भी प्रतिष्ठित हुये। प्रतिष्ठा कार्य श्रील गुरुदेव जी के पौरोहित्य में ही सुसम्पन्न हुआ था । इस महान अनुष्ठान में प्रतिष्ठाकार्य को सर्वाङ्ग सुन्दर

बनाने के लिये श्रील गुरुदेव जी के निम्नलिखित गुरुभाई उपस्थित थे

परम पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति गौरव वैखानस महाराज, परम पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति भूदेव श्रौती महाराज, परम पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज एवं पूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति शरण साधु महाराज, श्रील गुरुदेव जी ने अपने पंजाब के रहने वाले दीक्षित शिष्य, श्री नारायण ब्रह्मचारी को

मन्दिर निर्माण की सेवा के लिए तथा उसके बाद वृन्दावन मठ के मठ-रक्षक के रूप में नियुक्त किया था।

श्रीमन्दिर और श्रीविग्रह-प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में वृन्दावन मठ में 28 नवम्बर सोमवार से 4 दिसम्बर रविवार तक एक सप्ताह का विराट समारोह हुआ था। इस महासम्मेलन की संध्याकालीन धर्म सभा का उद्बोधन श्रील गुरुदेव जी ने किया । वृन्दावन शहर के श्री भगन लाल शर्मा ने समागत अतिथियों का समादर करते हुए

भाषण प्रदान किया। श्री प्रभुदयाल मित्तल, मथुरा के जिलाधीश, श्री बी. के. मित्रा, आइ. ए. एस., गौड़ीय संघ के अध्यक्ष, परम पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद भक्ति सारंग गोस्वामी महाराज, मथुरा के असिस्टैंट सैशन जज, श्री राम बिहारी लाल अग्रवाल, आगरा कार्पोरेशन के मेयर, श्री शम्भु नाथ चतुर्वेदी, अवकाश प्राप्त जिलाधीश, श्री. आर. पी. मिश्र - इन सब ने क्रमशः प्रत्येक दिन सभापति का आसन ग्रहण किया और सम्मेलन के अन्तिम दिन के अधिवेशन में भारत

सरकार के गृह, सार्वजनिक निर्माण एवं योजना विभाग के केन्द्रीय मन्त्री, श्री के. सी. रेड्डी ने प्रधान अतिथि के रूप में भाषण प्रदान किया । बहुत से मनीषी धर्म और नीति की शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दे रहे हैं। वर्तमान में तो भारत के प्रधानमन्त्री भी धर्म और नीति की शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दे रहें है, जबकि विभिन्न स्थानों पर प्रचार केन्द्र स्थापन करके धर्म और नीति की शिक्षा का विस्तार करने में श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ का प्रयास प्रशंसनीय है। इस समारोह की धर्म सभाओं में श्रील गुरुदेव जी के

अतिरिक्त अलग-अलग दिनों में परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति सर्वस्व गिरि महाराज, परिवाजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति भूदेव श्रौती महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्ड स्वामी श्रीमद् भक्ति विचार यायावर महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति प्रज्ञान केशव महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति विकास हृषीकेश महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति विलास भारती

महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति सौरभ भक्ति सार महाराज, श्रीमद् भक्ति देशिक आचार्य महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति दीपक भारती महाराज, श्रीपाद् राघव चैतन्य दास ब्रह्मचारी, श्री विश्वम्भर गोस्वामी, एम. ए., एल. एल. बी, श्री रास बिहारी गोस्वामी, एम. ए., श्रीमद् चक्रपाणि जी महाराज, श्रीमद् रामदास जी शास्त्री एवं श्री शरणानन्द जी ने भी भाषण दिये थे।

लाला श्री साईं दास जी (बिजली पहलवान), नवचूड़े वाले

मन्दिर के विग्रहों की प्रतिष्ठा, सात दिन के सम्मेलन एवं साधुओं के कोलकाता से आने जाने का सारा किराए इत्यादि का भार वहन करने के कारण धन्यधन्य हुए थे। लाला साईं दास जी को वृन्दावन मठ का नक्शा इतना पसन्द आया कि उन्होंने वैसा ही एक मन्दिर एवं कमरे अमृतसर शहर की लारेन्स रोड पर भी बनवाये। उनके प्रेम भरे निमन्त्रण पर श्रील गुरुदेव जी दल बल के साथ अमृतसर में कुछ दिन उनके मन्दिर में ठहरे एवं प्रचार किया। वहाँ अवस्थान के अन्तिम दिन वे श्रील गुरुदेव जी के पास

आये और ये कहकर कि अब मैं और आपके दर्शन नहीं कर पाऊँगा, रोने लगे। श्रील गुरुदेव जी ने उन्हें अनेक तरह से प्रबोधनवाक्यों के द्वारा सान्त्वना प्रदान की। कुछ दिन के पश्चात ही वह स्वर्ग सिधार गये और श्रील गुरुदेव जी से फिर उनका साक्षात्कार नहीं हुआ।

1 दिसम्बर रविवार को श्रील गुरुदेव जी की अध्यक्षता में 84 कोस व्रजमण्डल परिक्रमा, श्री व्रजमण्डल में श्रीदामोदर व्रत, श्रीनन्दग्राम में श्रीगोर्वधन पूजा और अन्नकूट महोत्सव, श्रीधाम

वृन्दावन में स्थित श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में उत्थान एकादशी को श्रील गुरुदेव जी की आविर्भाव-तिथि-पूजा, उसके अगले दिन महोत्सव एवं वृन्दावन में श्रीरास पूर्णिमा तिथि- पूजा सम्पन्न हुई। श्रील गुरुदेव जी की आविर्भाव तिथि पूजा में उनके गुरु-भाइयों में से जो उपस्थित थे, वे हैं- परम पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति हृदय बन महाराज, परम पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति प्रमोद पुरी महाराज, परम पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी

श्रीमद् भक्ति सौरभ भक्ति सार महाराज, पूज्यपाद श्रीमद् कृष्णदास बाबा जी महाराज, श्रीमन् नारायण मुखोपाध्याय, श्रीमद् कृष्ण केशव ब्रह्मचारी, श्रीमद् सुन्दर गोपाल ब्रह्मचारी, श्रीमद् गौरेन्द्र प्रभु, श्रीमद् हरेन्दु प्रभु, श्रीमद् ठाकुर दास ब्रह्मचारी और श्रीमद् गोर्वधन ब्रह्मचारी । श्रीमन्महाप्रभु जी की श्रीधाम वृन्दावन में शुभागमन लीला को स्मरण करते हुए वृन्दावन में स्थित श्री अमिय निमाई गौरांग मन्दिर में दोपहर के समय जो विराट सभा हुई थी वहाँ आमन्त्रित

होने पर श्रील गुरुदेव जी ने वहाँ भाषण प्रदान किया था।

"14 अगस्त 1964, शुक्रवार को दिन के पहले प्रहर में श्रील गुरुदेव जी की देखरेख में श्रीधाम वृन्दावन के श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ के संकीर्त्तन-भवन का संकीर्त्तन के साथ उद्घाटन हुआ। पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति भूदेव श्रौती महाराज जी ने वैष्णव होम का सारा कार्य किया। श्रीश्रीराधागोविन्द जी की झूलनयात्रा और संकीर्त्तन-भवन के उद्घाटन के उपलक्ष्य में 14 अगस्त

शुक्रवार से 23 अगस्त रविवार तक 10 दिन की धर्मसभा का आयोजन किया गया | धर्मसभायें प्रतिदिन सांय 4 बजे हुआ करती थीं। इस महान अनुष्ठान में पंजाब, उत्तरप्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, आसाम एवं दिल्ली आदि - भारत के विभिन्न स्थानों से आये सैंकड़ों नरनारियों ने योगदान किया। अधिकांश अतिथियों के रहने की व्यवस्था मिर्ज़ापुर धर्मशाला में हुई थी। दस दिन की धर्मसभा में सबसे पहले अभिभाषण दिया था परम पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति हृदय बन

महाराज जी ने। श्रील गुरुदेव जी के प्रतिदिन अभिभाषण के अलावा अलग-अलग दिनों में जिन्होंने भाषण दिये, वे हैं- परम पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति भूदेव श्रौती महाराज, परम पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति देशिक आचार्य महाराज, परम पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति सौरभ भक्तिसार महाराज, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति वेदान्त नारायण महाराज, श्रीमद् चक्रपाणि महाराज, श्रीमद् किशोरी दास बाबा जी महाराज,

पण्डित श्रीमद् कृष्णदास जी, श्रीमद् श्रीराघव दास शास्त्री, श्री राम दास शास्त्री, श्री गोवर्धन ब्रह्मचारी, श्री नवेन्दु मजूमदार, आई० सी० एस०, व त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ महाराज जी। 16 अगस्त रविवार एवं उसके अगले दिन सुबह श्रीमठ से विराट नगर-संकीर्त्तन शोभायात्रा निकाली गई जिसने श्रीधाम वृन्दावन के विभिन्न रास्तों पर परिभ्रमण किया। 14 अगस्त को पहले दिन दोपहर के महोत्सव में सैकड़ों नर-नारियों को विचित्र महाप्रसाद के द्वारा परितृप्त किया गया। श्री

श्रीराधागोविन्द जी की झूलनयात्रा के उपलक्ष्य में श्रीमठ के संकीर्त्तन-भवन में 18 अगस्त मंगलवार से 27 अगस्त रविवार तक बिजली से चलने वाली अतीव चित्ताकर्षक श्रीकृष्ण लीला-प्रदर्शनी प्रदर्शित हुई। स्वयं चलने वाली मूर्तियों की सहायता से अपूर्व श्रीकृष्णलीला-प्रदर्शनी के दर्शन करने के लिये स्थानीय नर-नारियों के अतिरिक्त समस्त मथुरा मण्डल और भारत के विभिन्न स्थानों से अगणित दर्शनार्थियों की भीड़ हुई। दर्शन का समय प्रतिदिन शाम के 7 बजे से रात 10.30 बजे तक हुआ करता

था । भीड़ को नियन्त्रण करने के लिये पुलिस और स्वयं सेवक नियोजित हुये थे।

नवनिर्मित संकीर्त्तन-भवन की सेवा देकर तथा बिजली से चलने वाली, श्रीकृष्ण-लीला प्रदर्शनी की व्यवस्था करके कोलकाता के निवासी सेठ श्रीराधाकृष्ण जी चामारिया को श्रील गुरुदेव जी और तमाम वैष्णवों का बहुत आशीर्वाद मिला। श्री राधाकृष्ण चामारिया जी ने प्रदर्शनी के विषय में अनुभवी श्री गजानन चामारिया जी को कृष्णलीला प्रदर्शनी की देखरेख के

लिये नियुक्त किया था। उस समय वृन्दावन मठ में रहते थे - पूज्यपाद श्रीमद् इन्दुपति ब्रह्मचारी प्रभु, श्री नरोत्तम ब्रह्मचारी, श्री नारायण दास ब्रह्मचारी, श्री मथुरानाथ दास बाबाजी महाराज, श्री वीरभद्र ब्रह्मचारी, श्री मथुरा प्रसाद ब्रह्मचारी और श्री ललित कृष्ण वनचारी। 31 अगस्त 1964 सोमवार, श्रीनन्दोत्सव के दिन उत्तर प्रदेश के महामान्य राज्यपाल, श्री विश्वनाथ दास भी श्रीमठ के दर्शन करने आये। मठ के साधुओं ने उनका बड़े सुन्दर ढंग से स्वागत किया।

सन् 1966 में श्रील गुरुदेव जी की अध्यक्षता में श्रीब्रजमण्डलपरिक्रमा के समय उत्थान एकादशी तिथि (23 नवम्बर बुधवार) को श्रील गुरुदेव जी की आविर्भाव तिथि- पूजा गोकुल महावन के अन्तर्गत ब्रह्माण्ड घाट पर सम्पन्न हुई। सभी भक्तों ने अक्रूरघाट और भातरोल दर्शन किये तथा द्वादशी तिथि के दिन वृन्दावन मठ में पहुँचकर श्रील में गुरुदेव जी के आविर्भाव उपलक्ष्य में अनुष्ठित महोत्सव में हिस्सा लिया। शाम की धर्मसभा में शिष्यों के आत्यन्तिक मंगल के लिये श्रील

गुरुदेव जी ने श्रीरूपगोस्वामी जी के लिखे उपदेशामृत ग्रन्थ के श्लोकों की व्याख्या की। इसके अतिरिक्त 'गुरुतत्त्व और गुरु पूजा की आवश्यकता' के सम्बन्ध में भाषण दिये- परम पूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति प्रकाश अरण्य महाराज, परम पूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति विचार यायावर महाराज और परम पूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति विकास हृषीकेश महाराज जी ने। 16अगस्त, 1967 बुधवार से 20 अगस्त रविवार तक श्रील गुरुदेव जी की अध्यक्षता में वृन्दावन के श्रीचैतन्य

गौड़ीय मठ के सुरम्य संकीर्त्तन भवन में श्रीश्रीराधागोविन्द जी के झूलन यात्रा उत्सव के उपलक्ष्य में कोलकाता के सेठ तथा धार्मिक व्यक्ति श्री राधाकृष्ण चामारिया की सेवा-प्रेचष्टा से बिजली से चलने वाली मूर्तियों के सहयोग से जो कृष्ण लीला उद्दीपक अभूतपूर्व मनोरम दृश्यावली प्रदर्शित हुई थी, उसके दर्शन से स्थानीय नरनारियों के अलावा मथुरा, हाथरस, आगरा आदि उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली और पंजाब से अगणित दर्शनार्थियों की भीड़ हुई थी। श्रीमति आनन्दमयी माता, श्री हरिबाबा, श्री प्रभु दत्त

ब्रह्मचारी आदि स्थानीय धर्म-प्रतिष्ठानों के आचार्य और राजस्थान के मन्त्री कुछेक विशिष्ट व्यक्तियों के साथ, मथुरा के जिलाधीश, जिलाजज, सब जज, ए० डी० एम० एस० पी० डी० एस० पी० आदि विशिष्ट व्यक्ति भी दर्शन के लिये आये। उन्होंने दृश्यावली की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की तथा इन सबके लिए श्रील गुरुदेव जी को आन्तरिक धन्यवाद दिया। मठ के पास ही श्रीरामकृष्ण मिशन हस्पताल के स्वामी जी लोग भी अपूर्व कृष्णलीला प्रदर्शनी की बात सुनकर मठ में दर्शन करने के

लिये आये तथा श्रील गुरुदेव जी द्वारा उन्हें प्रसाद के लिए आमन्त्रित करने पर उन्होंने मठ में महाप्रसाद भी ग्रहण किया। राम कृष्ण मिशन के कोईकोई स्वामी जी पहले भी श्रील गुरुदेव जी से कृष्ण कथा सुनने के लिये मठ में आते थे । दर्शनार्थियों की भीड़ को नियन्त्रण करने के लिये सरकार से पुलिस मंगाई गई थी व श्रील गुरुदेव जी के निर्देशानुसार दर्शन की सुश्रृंखलता बनाये रखने के लिये पंजाब, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के पुरुष शिष्यों को पुरुष दर्शनार्थियों एवं महिला शिष्यों को महिला दर्शनार्थियों की

भीड़ को नियन्त्रण के लिये भी सेवा में लगाया हुआ था। श्रील गुरुदेव जी के प्रकट काल में वृन्दावन मठ की झूलनयात्रा उत्सव तथा श्रीकृष्णलीला-प्रदर्शनी प्रति वर्ष इसी प्रकार से विशेष समारोह के साथ सुसम्पन्न होती तथा उसके दर्शन के लिये अगणित दर्शनार्थी आते।

7 अक्तूबर सोमवार से 11 नवम्बर 1968 सोमवार तक श्रील गुरुदेव जी की देखरेख में श्रीदामोदर-व्रत के समय आर्यावर्त्त-परिक्रमा का, श्रीगौरांग महाप्रभु जी

और श्रीमन् नित्यानन्द प्रभु जी के चरणचिन्हित पदांकपूत तीर्थस्थानों का और अन्यान्य तीर्थ स्थानों के दर्शनों का विराट आयोजन हुआ था। तब भक्तों ने दर्शन किये थे- गया, प्रयाग, उज्जयिनी, डाकोर, प्रभास, सोमनाथ, सुदामापुरी (पोरबन्दर), द्वारका, भेंट द्वारका, सिद्धपुर, श्रीनाथद्वारा, पुष्कर, जयपुर, मथुरा, वृन्दावन, गोकुल महावन, श्रीराधाकुण्ड, श्रीश्यामकुण्ड, गिरि गोवर्धन, नन्दग्राम, बरसाना आदि, हस्तिनापुर (नई दिल्ली), कुरुक्षेत्र,

हरिद्वार, ऋषिकेश, नैमिषारण्य, मिश्रिक, अयोध्या और वाराणसी।

25 अक्तूबर शनिवार पूर्णिमा तिथि से 23 नवम्बर 1969 रविवार तक श्रीधाम वृन्दावन के श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में रहते हुये श्रील गुरुदेव जी की अध्यक्षता में श्रीधाम वृन्दावन में श्रीदामोदर पालन हुआ तथा वृन्दावन के इलावा अन्य विभिन्न वनों में श्रीकृष्ण लीला स्थलियों का दर्शन भी किया गया। इन सारे दर्शनों का आयोजन वृन्दावन मठ में रहते हुये बसों द्वारा सुसम्पन्न हुआ था। श्रीधाम

वृन्दावन के श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में उत्थान एकादशी तिथि पर श्रील गुरुदेव जी की आविर्भाव-तिथि-पूजा अनुष्टित हुई और भक्तों द्वारा विभिन्न स्थानों से भेजी हुई भक्ति - पुष्पांजलियों को सभा में पढ़ा गया।

22 अक्तूबर 1972 रविवार, शारदीय रास पूर्णिमा तिथि से 21 नवम्बर मंगलवार श्रीकृष्ण की हेमन्तिकी रास पूर्णिमा तिथि तक, 15 अक्तूबर 1975 बुधवार एकादशी के दिन से 18 नवम्बर शुक्रवार उत्थान एकादशी तिथि तक व 12 अक्तूबर 1978 वृहस्पतिवार

एकादशी तिथि से 11 नवम्बर शनिवार श्रीउत्थान एकादशी तिथि तक श्रील गुरुदेव जी की देखरेख में श्रीमथुरा मण्डल में श्रीदामोदर व्रत पालन और 84 कोस श्रीव्रजमण्डल-परिक्रमाएँ सम्पन्न हुईं। सन् 1975 और सन् 1978 में ब्रजमण्डल परिक्रमा के समय श्रीकृष्ण की हेमन्तिकी रास पूर्णिमा तिथि तक श्रीवृन्दावन मठ में भक्तों ने अवस्थान किया था। सन् 1975 की व्रज-परिक्रमा में रहने के शिविर निम्न प्रकार से थे - (1) मथुरा का किसान भवन, डेम्पियार पार्क (2) गोवर्धन - डीग् दरवाज़ा (3)

काम्यवन में विमलाकुण्ड (4) बरसाना धातरिया धर्मशाला (5) नन्दग्राम कालेज (6) कोसी में लाला गयालाल अग्रवाल स्मृति भवन (7) गोकुल महावन में ब्रह्माण्ड घाट (8) वृन्दावन में श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ। सन् 1978 में रहने के शिविर थे- (1) मथुरा में भिवानी धर्मशाला (2) गोवर्धन में मैना धर्मशाला (3) काम्यवन में विमलाकुण्ड (4) बरसाना में धातरिया धर्मशाला (5) नन्दगाँव में पावन सरोवर के तट पर परम पूज्यपाद बन महाराज जी के द्वारा प्रतिष्ठित श्रीकृष्ण चैतन्य इण्टर

कालेज (6) कोसी में लाला गया लाल अग्रवाल स्मृति-भवन (7) गोकुल-महावन में श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ (8) वृन्दावन में श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ | एक शिविर से दूसरे शिविर में भक्तगण अपने-अपने विस्तर साथ ही लेकर बस द्वारा गये थे।

सन् 1978 में श्रील गुरुदेव जी की अध्यक्षता में अनुष्ठित शेष ब्रजमण्डल-परिक्रमा में श्रील गुरुदेव जी द्वारा अस्वस्थता का लीलाभिनय करने के कारण वे समस्त शिविरों में साक्षाप से

उपस्थित न रह सके। किन्तु वृन्दावन मठ में रहकर सब समय सम्वाद लेते रहते और परिक्रमा का नियन्त्रण करते रहते थे। मथुरा में ऊँचे टीले पर चढ़कर श्रीवराहदेव जी के दर्शन करने की कोशिश से जब उन्होंने काफी अस्वस्थता का लीलाभिनय किया तो भक्तों को उनके बारे में शंका सी होने लगी थी परन्तु डाक्टर श्री हलधर दास जी की सेवापरिचिर्या से कुछ अच्छा अनुभव करने पर वे मथुरा की धर्मशाला में लौट आयें | मधुवन-तालवन-कुमुदवन की परिक्रमा के दिन भी । मधुवन में पहुँचकर स्वयं

को अस्वस्थ अनुभव करने पर उन्होंने मधुवन की भजनकुटी के श्रीगौड़ीय सेवाश्रम में विश्राम किया। श्रीगोवर्धन के शिविर में भी वे गये थे, किन्तु हृदय के रोग में सम्पूर्ण विश्राम लेना अत्यावश्यक है- इस प्रकार डा० के बार-बार सावधान करने पर वे विश्राम के लिये वृन्दावन के मठ में चले गये। त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद भक्ति विज्ञान भारती महाराज जी पर उनकी सेवा-शुश्रुषा का दायित्त्व था। श्रील गुरुदेव जी के दर्शन तथा उनकी श्रीमुखपद्मविनिःसृत उपदेशवाणी सुनने से वन्चित होने के कारण

परिक्रमाकारी भक्तों ने परिक्रमा के समय पहले जैसा आनन्दानुभव न किया।

9 अगस्त 1973 वृहस्पतिवार से 14 अगस्त मंगलवार तक श्रीवृन्दावन मठ में श्रीश्रीराधागोविन्द जी के झूलनयात्रा उत्सव के उपलक्ष्य में संकीर्त्तन-भवन में बिजली से चलने वाली मूर्तियों के द्वारा जो श्रीकृष्ण लीला प्रदर्शनी के विशाल सजावट का आयोजन हुआ था। उसका उद्घाटन किया था पंजाब के महामान्य राज्यपाल श्री महेन्द्र

मोहन चौधरी जी ने | श्री महेन्द्र मोहन चौधरी श्रील गुरुदेव जी के पहले से परिचित थे। उन्होंने प्रतिष्ठान के पूर्वांचल केन्द्र - आसाम प्रदेश के गोहाटी स्थित श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में आसाम के मन्त्रीपद और मुख्य मन्त्रीपद पर रहते समय दो बार शुभ पदार्पण किया था । बहुत देर के बाद श्री महेन्द्र मोहन चौधरी और श्रील गुरुदेव जी ने वृन्दावन में मिलकर हृदय में असीम प्रसन्नता का अनुभव किया।

श्रीलगुरुदेव